# भारतीय विद्यालय वादी कबीर

No.

## कार्यपत्रिका–अर्थग्रहण

नाम..... कक्षा...10..... दिनांक.....

तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमंत्रण!
रात का अंतिम प्रहर है,
झिलमिलाते हैं सितारे,
वक्ष पर युग बाहु बाँधे
मैं खड़ा सागर किनारे,
वेग से बहता प्रभंजन
केश-पट मेरे उड़ाता,
शून्य में भरता उदधि
उर की रहस्यमयी पुकारें,
इन पुकारों की प्रतिध्वनि
हो रही मेरे हृदय में,
है प्रतिच्छायित जहाँ पर
सिंधु का हिल्लोल-कंपन!
तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमंत्रण!

विश्व की संपूर्ण पीड़ा
सम्मिलित हो रो रही है,
शुष्क पृथ्वी आँसुओं से
पाँव अपने धो रही है,
इस धरा पर, जो बसी दुनिया
यही अनुरूप उसके-
इस व्यथा से हो न विचलित
नींद सुख की सो रही है,
क्यों धरणि अब तक न गलकर
लीन जलनिधि में गई हो ?
देखें क्यों नेत्र कवि के
भूमि पर जड़-तुल्य जीवन ?
तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमंत्रण!

**प्र.1 कवि तट पर ज़्यादा देर क्यों नहीं रुक सकता ?**

क. क्योंकि ठंड बढ़ गई है। ☐
ख. क्योंकि बहुत ज़्यादा शोर है। ☐
ग. क्योंकि लहरें आगे बढ़ने के लिए निमंत्रण दे रही हैं। ☐
घ. क्योंकि तूफ़ान के आने की संभावना है। ☐

**प्र.2 कवि समुद्र के किनारे किस प्रकार खड़ा है ?**

क. रेत में पैर धँसाकर ☐
ख. ऊँची चट्टान पर चढ़कर ☐
ग. नारियल के वृक्ष से टिककर ☐
घ. दोनों हाथों को छाती पर बाँधकर ☐

**प्र.3 समुद्र के गर्जन का कवि-हृदय पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?**

क. तटस्थता और उदासीनता का ☐
ख. अशांति और व्याकुलता का ☐
ग. उदासी और निराशा का ☐
घ. सभी ठीक हैं। ☐

**प्र.4 विश्व की संपूर्ण पीड़ा-**

क. तूफ़ान ला रही है। ☐
ख. आँसू रूपी जल इकट्ठा कर रही है। ☐
ग. समुद्र में ऊँची लहरें उठा रही है। ☐
घ. सम्मिलित हो रो रही है। ☐

**प्र.5 पृथ्वी पर बसी दुनिया सुख की नींद सो रही है क्योंकि-**

क. लगातार परिश्रम के कारण थक गई है। ☐
ख. सभी का हृदय संतुष्ट है। ☐
ग. वह दूसरों के कष्टों व दुखों से चिंता रहित है। ☐
घ. स्वभाव वश। ☐